सिन्धु घाटी की सभ्यता
पर आधारित उपन्यास

धवलद्वीप

याक़ूब यावर

दिलमुन के बाद सिन्धु-घाटी त्रय का दूसरा उपन्यास

धवलद्वीप

(उपन्यास)

याक़ूब यावर

‘दिलमुन’ की प्रेरक

उस पवित्र आत्मा के नाम

जिसका नाम इरावती था

और जिसकी कमी इस भाग को लिखते हुए सबसे अधिक महसूस हुई

साधुवाद

- इस उपन्यास में अलबाब्लोन और गिलगमोश से संबन्धित कुछ जानकारी उर्दू के प्रसिद्ध लेखक मालिक राम की पुस्तक "हमोरबी और बाबली तहज़ीब-ओ-तमद्दुन" से ली गयी है।
- अलबाब्लोन की सभ्यता से संबन्धित कुछ जानकारी नियाज़ फ़तहपूरी की उर्दू पुस्तक "तरगीबात ए जिंसी" से ली गयी है।
- उपन्यास में पवित्र ऋग्वेद और मनुस्मृति के श्लोक उद्धृत किए गए हैं।
- इस उपन्यास में तारन के गाने के बोल सुप्रसिद्ध संगीतकार **डॉ तन्वी गोस्वामी** के दिये हुए हैं।
- अलबाब्लोन के माबद में गाया जाने वाला गीत **डॉ इरावती** के नाटक संग्रह "रूपान्तरण" से लिया गया है।
- मित्र **कबीर अजमल** के आकस्मिक निधन से दुखी हूँ। गुजरात से संबन्धित विभिन्न मानचित्र एवं अन्य सामग्री उन्होने उपलब्ध कारवाई थी। अल्लाह उनकी मगफिरत फरमाए।

इन समस्त लेखकों, अनुवादकों, समीक्षकों, संपादकों और

डॉ तन्वी गोस्वामी के सहयोग का आभारी हूँ कि इन सबके सहयोग के बिना यह उपन्यास पूर्ण नहीं किया जा सकता था।

क्रम

पुरोवाक	6
आरंभ	9
1.नव-प्रभात	17
2. व्यावसायिक नगर	36
3. हानेश और काविया	51
4. गिलगमूश	75
5. प्रस्थान	92
6. युद्ध	106
7. अहुराज	133
8. षड्यंत्र	150
9. सोनारी	172
10. लोथल का विद्रोह	178
11. एक और युद्ध	188
12. नई शरण-स्थली	204
उपसंहार	220

पुरोवाक

सिन्धु घाटी त्रय के पहले और दूसरे उपन्यास के मध्य अंतराल इतना लंबा हो गया है कि अब इसके बारे में कुछ कहने का कोई अर्थ नहीं रह गया है। इस श्रृंखला का मेरा पहला उपन्यास, दिलमुन 1997 में आया था। इस बात को अब 23 साल हो गए हैं। अब तक इस उपन्यास के तीन संस्करण उर्दू में (भारत से दो और पाकिस्तान से एक), हिंदी में दो संस्करण (एक प्रलय-सिन्धु के नाम से और दूसरा दिलमुन के नाम से) और अंग्रेजी में दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इससे यह बात सिद्ध होती है कि यह उपन्यास पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहा है। मुझे लगता है कि बहुत से लोगों ने इसे पसंद किया। इसलिए कि इस पर उनकी टिप्पणियाँ उर्दू, हिंदी और अंग्रेजी में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं; जिनसे मुझे संतुष्टि और प्रोत्साहन मिला। मुझे प्राप्त पत्रों, ईमेल और संदेशों ने भी यह एहसास कराया कि मेरे पाठक मुझसे प्रेम करते हैं। दिलमुन अपने आप में एक संपूर्ण उपन्यास था। परन्तु शुरुआत से ही मेरा इरादा इस श्रृंखला को तीन उपन्यासों तक ले जाने का था, जो सभी अपने आप में पूरे भी हों और उनके मध्य एक विशेष संबंध भी हो। ऐसा त्रय-लेखन अंग्रेजी साहित्य में आम है और वहां आपको कई उपन्यास मिलेंगे जिन्हें हम त्रय के तहत रख सकते हैं। कुछ उपन्यासकारों ने ऐसे श्रृंखला-बद्ध उपन्यासों को हिंदी में भी आरंभ किया है।

मेरे आलस्य के अतिरिक्त, देरी का एक कारण यह भी था कि मैं अपने उपन्यास में वर्णित सभी स्थानों को वहाँ जाकर स्वयं देखना चाहता था। इसके लिए मेरा इच्छा थी कि मैं पाकिस्तान जाकर मोहन-जो-दारो और हड़प्पा के अवशेषों के दर्शन करूँ और उनसे लाभान्वित होऊं और साथ ही मैं भारत के उन सभी स्थानों का भ्रमण करना चाहता था जो इस सभ्यता से संबंधित हैं। मेरे प्रिय मित्र डॉ यूसुफ खुश्क ने जो उस समय बहाउद्दीन ज़करिया विश्वविद्यालय, खैरपुर, पाकिस्तान में उर्दू विभाग के अध्यक्ष और वहाँ के कला संकाय के डीन थे और अब इस समय पाकिस्तान अकादमी ऑफ़ लेटर्स, इस्लामाबाद के अध्यक्ष हैं, मुझे एक अंतर-राष्ट्रीय विचार-गोष्ठी में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित भी किया। उन्होने मुझसे वादा किया था कि वो मुझे वांछित समस्त स्थलों का भ्रमण कराएंगे। मैंने इस यात्रा की पूरी तैयारी भी कर ली थी परन्तु भाग्य अपना काम कर रहा था। देश में कुछ